International Journal of Political Science and Governance 2022; 4(2): 01-03

E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2022; 4(2): 01-03
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 03-04-2022
Accepted: 04-05-2022

Dr. Beena Joshi
Assistant Professor, Political Science, Govt. Girls College, Haldwani, Uttarakhand, India

Corresponding Author:
Dr. Beena Joshi
Assistant Professor, Political Science, Govt. Girls College, Haldwani, Uttarakhand, India

गगास नदी की मरती सहायक धाराऐं

Dr. Beena Joshi

सारांश
दुनिया भर में मरती नदियों के पीछे कारण बढ़ता शहरीकरण तथा घटते गांव है। विकसित तथा विकासशील सभी देशों ने अपनी नदियों को पिछले 20 वर्षों में खोया है। पानी की मात्रा तथा गुणवत्ता का नुकसान आज दिखाई दे रहा है। शहरों का कचरा ढोती नदियां मरने के कगार पर है। यही हाल ग्लेशियरों का भी है। जलवायु परिर्वतन से बढ़ता तापमान ग्लेशियरों पर हमला कर रहा है। शहरों की बढ़ती बिजली, पानी की आवश्यकता गांव के हिस्से को लील चुकी है। जलवायु परिर्वतन से सबसे अधिक प्रभाव हिमालय पर पड़ा है। भारतीय हिमालय यूवा है लेकिन विश्व स्तर पर हिमालय क्षेत्र के बारे में बहुत कम ध्यान गया है। पृथ्वी की सभी भागों की पीड़ा को समझना होगा। नये–नये आविष्कार पहले से ठाठ से जी रही जनता को तुष्ट करने में लगी है। जबकि बड़ी आबादी मौलिक आवश्यक्ताओं से वंचित है। उत्तराखण्ड में राज्य संरक्षित खनन ने नदियों और पहाड़ों के अस्तित्व को खतरें मे डाल दिया है। सदाबहार नदियां दम तोड़ने लगी है तथा जलचक्र प्रभावित है। नन ग्लेशियर पर नदियों पर छोटे–छोटे खाव बनाकर जीवनदान देना होगा। पश्चिमी दर्शन इस्तेमाल करों और फेंको की नीति की जगह पर्यावरण समर्थित भारतीय दर्शनवाली जीवनशैली अपनानी होगी। जागरूकता और जनसहभागिता से सफलता मिलेगी न कि केवल कागजी सरकारी योजनाओं से। कभी सदा बहने वाली गगास नदी की आज 95 प्रतिशत धाराऐं सुख गई है जो अन्तिम सांसे गिन रही है। पानी बचाने की नही पानी उगाने की मुहित छेडनी है। नदी, पर्यावरण व जंगल में सामंजस्य बिठाना है विस्तृत शोध में परिकल्पना के समस्या के कारणों, प्रभावों, समाधानों को खोजने का प्रयास किया है।

मूल शब्दः बढ़ता शहरीकरण, विकसित देश कानून, पानी की मात्रा तथा गुणवत्ता का नुकसान

प्रस्तावना
भारत ने विकास की अवधारणा भले ही पश्चिम से ले ली लेकिन इसमें पर्यावरण को जगह नहीं दी। विकसित देश कानून द्वारा विकास व पर्यावरण में संतुलन बनये रखते है जबकि भारत में कंकरीट व डामर का घोल। परिणाम स्वरूप तापमान में वृद्धि। गर्मी में ज्यादा गर्मी,ठण्डे में ज्यादा ठण्ड। पेड़, घास, झाड़िया तथा मिट्टी सूर्य के ताप को अपने में समा लेती है। जिससे जमीन ठण्डी रहती है जबकि कंकरीट केन्द्रिति विकास ने जंगल, नदी, व कृर्षि को समाप्त किया है। पानी के प्राकृतिक स्त्रोत सूखते जा रहे है।
'खनन' ने नदी व पहाड़ के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। जिसे राजीतिक संरक्षण प्राप्त होता है जलस्त्रोत खूखने के कारण जानवरों को मजबूर होकर पानी पीने के लिए बाहर आना पड़ता है। उत्तराखण्ड के अलग–अलग इलाकों में भूख व प्यास के कारण जानवरो की गांवों में धुसने की घटनाऐं आती है। कारण है पानी की तलाश। पेड़ की कटाई व खनन ने जलवायु चक्र की पूरी व्यवस्था को खत्म कर दिया है। पानी को संजोकर रखने वाले परम्परागत वृक्षों की संख्या घटती जा रही है। प्रशासन कोई ऐसी नीति नहीं अपनाती जो परंपरागत जलस्त्रोतों को विकसित कर सकें।
बदलती दुनिया ने हमारे पर्वतीय गांव कमजोर पड़ते जा रहे है। यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार 1945 में गांवों की आबादी 3 अरब थी शहरों की लगभग 2 अरब। 2015 आते–अउाते गांवों की आबादी 2 अरब तथा शहरों की आबादी 3 अरब से अधिक हुई है। दुनियां में मरती नदियों का कारण बढ़ता शहरीकरण तथा घटते गांव है[1]। पानी की मात्रा व गुणवत्ता का बड़ा नुकसाान हुआ है। शहरो का कचरा ढोती नदियों की तरह ग्लेसियरों की भी ऐसी ही स्थिति है। ग्लोबल वार्मिंग सर्वप्रथम इन्ही पर हमला कर रही है।

समस्या, कारण व प्रभाव
उत्तराखण्ड के कुमाऊँ में 'गगास' नदी ऐसी है जिसके दो उद्‌गम स्थान माने जाते है कभी सदाबहारी रही नदी अब तेजी से सूखती जा रही है। स्थानीय जनता की समझ व सहयोग के बल पर इसे फिर से सदाबहारी करने का प्रयास अमर उजाला फाउंडेशन द्वारा 22 मई 2017 से किया गया। रानीखेत व आसपास के कस्बों के लिए जीवनदायिनी गगास नदी को जंगल ही बचाए हुए है।

गगास को पानी फीड करने वाले धारपानीधार एक्वीफायर (भूमिगत जलाशय)में पानी कम होने से 43 सालों में गगास का पानी तेजी से कम हुआ है। 43 सालों में गगास का पानी तेजी से कम हुआ है। अल्मोड़ा में करीब 52 वर्ग कि0मी0 में गगास नदी का जल संग्रहण क्षेत्र हैं[2]। जलाशय का पानी कम होने से इस नदी की कई जलधाराएं अपना आस्तित्व खो चुकी है। रानीखेत सहित अन्य कस्बों के करीब 50,000 लोगो को पानी उपलब्ध कराने वाली गगास नदी का संकट इन सब लोगो का संकट बन रहा है पानी कम होने का एक कारण 'जंगल की आग' भी है।

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार बंजर जमीन में पानी को सोखने की क्षमता कम होती है। फलस्वरूप रिचार्ज होने की क्षमता कम होगी। हमारे विकास के सारे काम हवा, पानी, जंगल,मिट्टी, आकाश सबको बर्बाद करने पर तुले है। सरकार व जनता नदियों को बचाने में असफल रही है। 'अमर उजाला फाउंडेशन' ने जनजागारण कर महत्वपूर्ण काम किया है। जलस्तर निरंतर गिरने से गगास नदी अंतिम सांसे गिन रही है[3]। नदी से रानीखेत,द्वाराहाट क्षेत्र के लिए 6 बड़ी पेयजल योजनाएं संचालित हो रही है वही क्षेत्र के किसान सिंचाई के लिए भी इसी पर निर्भर है। पिछले 12 सालों में प्रवाह में कमी आया हैं। नदी की यात्रा चुनौतियों से भरी पड़ी है। गगास नदी के उद्गम स्थल के पास ही 3 धाराए मिलती है। नन– ग्लेसियर होने के कारण नदी को रीचार्ज करना जरूरी है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण कुमाऊँ की सरयू, रामगंगा ईस्ट, रामगंगा वेस्ट,नदियों का रूप कैनाल का रूप ले चुकी है। चैक डेम या खाल–चाल (खाव) बनाकर ही इनको जीवन दिया जा सकता है। लोगो द्वारा कचरा फैलाने से ग्लेसियर क्षेत्रों का माइक्रो क्लाइमेट डिस्टर्ब हो जाता है। कचड़ा सड़ने से खतरनाक गैस निकलती है। यही गंदगी बहकर पानी में आती है व ग्लेसियार टूटन बड़ जाती है[4]।

रेता बजरी के लिए गगास नदी का सीना छलनी किया जा सुका है। इस पर प्रभावशाली कुछ ग्रामीण लोगो का वर्चस्व है बाकी ग्रामीण बेबस। पानी को बचाने के लिए लोगो को एकजुट करना कठिन काम है। जल संस्थान की ओर से गांव के लोगों को पेयजल योजना ना के बराबर है महिला मंगल दल एक संगठन मतभेदों के कारण सक्रिय नहीं है। गांव से बहती जंतरगाड़ में बजरी पत्थर के लिए खुदाई की जा रही है।

पहाड़ों का विकास होना भी पलायन की एक वजह रही है। सुविधाओं के बाद भी हवालबाग अल्मोड़ा के 50 परिवार पलायल कर गए। उच्च शिक्षा व रोजगार की चाहत से छूट रहा है। गांव जबकि गांव में अदरख, लहसुन, तेजपात की खेती भरकस मात्रा में होती है। आज पहाड़ दहशत में है पानी की कमी मुख्य कारण है।

''जल संघर्ष' गगास घाटी में पनप रहा है कुकुछीना से नायल तक पानी कम हुआ है। पानी पर अधिकार को लेकर अत्यधिक खींचतान है। दूनागिरी के आस–पास के क्षेत्रों में पानी के लगातार कम होने का असर दिखा है। जो पूरे क्षेत्र में प्रसार रहा हैं। रतखाल गर्भमुनी के आश्रम, खोलियाबांज, पाण्डुकेश्वर से निकलने वाली धाराएं रतखाल में ही गगास नदी का रूप ले लेती है। जो खोलिया गांव दुधौती ओर अन्य कई गांवों को पानी देती हैं इसका पानी कम होता जा रहा है। जो पानी बचा है यही झगड़े की वजह बना है। मंदिर समिति तो पानी का इस्तेमाल तो करती है लेकिन संवर्धन के लिए प्रयान न के बराबर। इस पानी पर गांव का भी हक होता है।

एक व्यवसायी ने बोरिंग कर प्रतिदिन बड़ी मात्रा में पानी का निजी उपयोग शुरू कर दिया। इस पूरे क्षेत्र में सदा बहने वाली 95 प्रतिशत से अधिक की धाराए सूख गई है। जीवन प्रभावित होने से फसल भी प्रभावित होती है। ''सूखी नदी से ''लाल गर्मी'' पैदा होती है। जो बादलों को दूर भगा देती है[5]। कुकुछीना से नायल तक पानी का स्तर इतना कम हुआ है कि हर ग्रामसभा में पानी को लेकर विवाद है। कुकुछीना से नायल तक पानी की 95 प्रतिशत धाराएं सूख चूकी है।

समाधान

हम पृथ्वी को माता मानते है और सतत् विकास हमारे दर्शन व विचारधारा का मूल सिद्धांत रहा है। महात्मा गांधी के शब्दों में ''धरती प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यक्ता तो पूरी कर सकती है पर प्रत्येक व्यक्ति के लालच को नही''[6]।

आज पर्यावरण चिन्तक विकास के नाम पर होने वाले हर तरह के विकास को रोकने को उतारू है जबकि नीतिकार इसे मानने को तैयार नही। आज प्रश्न है विकास बनाम पर्यावरण दोनो ही तरह की अतिवादिता से बचना होगा। विकास की सीमा के अन्तर्गत नीति व योजनाएं बने[7]। उत्तराखण्ड के लिए नये फ्रेमवर्क जरूरी है। उत्तरपूर्वी राज्यों में सफल शोध के बाद सफल तस्वीर सामने आयी है। जिसका उपयोग पूरे हिमालय क्षेत्र में किया जा सकता है।

जंगलों की हरियाली लौटाकर पाईपलाईन सभ्यता की जगह नदी सभ्यता को लेना होगा[8]।

पानी बचाने की नही उगाने की मुहिम छेडनी होगी ताकि बारिश का पानी गगास में रह ले[9]। बांज बुराश के पेड़ लगाकर खनन रोकना होगा। पानी, पर्यावरण व जंगल के बीच सामन्जस्य स्थापित कर उमर उजाला फाउंडेशन ने 22 मइ 2017 से जनचेतना जागृत कर सराहनीय कार्य किया। जलपुरूष को भी भागीदार बनाया गया। नदी बचाने की शुरूआत गधेरे बचाकर ही की जा सकती है। फाउंडेशन द्वारा पदयात्रा कराकर लोगो को जागरूक किया गया। खोलियाबरी, रतखाल, नायल, कुकुछीना, अमियांगाव, जंतरगाड़ आदि अनेक गांवो से पदयात्रा गुजरी। परिणाम स्वरूप लोग नदी संरक्षण को आगे आए।

चेतना रैली का प्रभाव यह हुआ कि जल पंचायत ने सूखी नदी के सीने पर जल पंचायत बुलकार चाल–खाल (खाव) बनाने का संकल्प लिया। गांववासियों ने खुद जिम्मेदारी ली। अभी बरसात में यह काम किया गया। 'चीड के पेड़ो' से भी छुटकारा पाना जरूरी है। महिलामंगल दल भी इससे जुड़ने लगीं जिसकी अध्यक्ष पार्वती रावत ने स्वयं कमान अपने हाथ में लेकर खाव बनाने की शुरूआत की। ''गांव व समाज जुड़ेगा तभी बचेगा पानी'[10]। जंतरगाड़ से 3 किमी0 नीचे तक नदी में भरपूर पानी है कारण 'पासीखाव' का लबाबल भरा रहना।

आने वाली पीढ़ी के लिए धरती को बचाना होगा पृथ्वी के व्यवहार में बदलाव के कारण भ्रमित सरकार व समाज को जीने का रास्ता याद दिलाना होगा।

उद्देश्य

'गगास नदी' बीमार है पर आई0सी0यू0 में नहीं। नदी का स्वरूप बिगड़ गया है। इसे पुनर्जिवित करना होगा। महिला मंगलदल द्वारा शुरू की गयी किल्मोड़ा, हिसाल, झिंगारू की झाड़ियों को न काटने की परंपरा को जनचेतना का माध्यम से आगे बढ़ाना होगा। बोराखोला गांव में सूखे परंपरागत खाव को जो अब मिट्टी से भर चुका हे फिर से बनाकर जीवन देना होगा।

अन्तर्राष्ट्रीय जलप्रबंधन के अनुसारः करीब 1.2 अरब लोग भौतिक जलसंकट से गुजर रहे हे। जबकि 27 करोड़ लोग बेहतर जल से वंचित है। करीब 25 लाख लोगों की मृत्यु प्रदूषित जल के कारण होती है[11]। यह स्थिति न हो इस पर ध्यान देना इस लेख का उद्देश्य है।

हमारे विकास के काम हवा,पानी,मिट्टी, को बरबाद कर चुके है। 737 प्रजातियां लगभग समाप्त हो गई हे। 11 प्रतिशत प्रजातियों खतरे के कगार पर है। दुनिया की सभी नदियॉ किसी न किसी

संकट से गुजर रही हैं नदियां जल की मात्रा व गुणवत्ता खो रही है[12]। हमारे देश की 70 प्रतिशत नदियां मरने के कगार पर है। इस समस्या की गंभीर मानते हुए –

- गांव के प्रति लोगो की मनः स्थिति में परिर्वतन लाना तथा जल के प्रति जागरूक करना।
- बाज व बुरांश पेड़ उगाने की पर्वतीय क्षेत्रों की संस्कृति का विकास।
- नदी से टैंकरों द्वारा संस्थानों को पानी सप्लाई रोकना उन्हें त्पद भ्तअमेजपदह तकनीक अपनाने को प्रेरित करना।
- 90 प्रतिशत सूखी नदियों को पुनः अध्ययन कर रवाल–चाल पद्धति कारगार हुई या नहीं।
- लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया में सरकार पर गांव का लोक नियंत्रण स्थापित कर क्मबपेपवद डांपदह में भागीदार बनाना व उसके साथ हो रहे अन्याय का प्रतिकार करना ही इस शोध लोक का उद्देश्य है।

अध्ययन पद्धति

प्रत्यक्ष रूप से इस क्षेत्र से जुड़े रहने के कारण तथा चुनौती का अनुभव का भागीदार होने के कारण मनोविश्लेष्णात्मक व्यवहारवादी पद्धति का पयोग कर केस स्टडी में पर्यवेक्षात्मक पद्धति काफी अपनाया गया है। तटस्थता का निर्वाह करते हुए, आधुनिक राजनीतिक विकास उपागभ' का प्रयोग कर गांव के सम्पूर्ण विकास सम्बन्धी समस्याओं को समझने का प्रयास किया गया ह। राजनीतिक विकास उपागम से गांव की राजनीतिक समस्याओं का विवेचन, तुलना, स्पष्टीकरण व भविष्यवाणी करने में मदद मिली है।

निष्कर्ष

हिमालय का जल मिट्टी पूरे देश का काम आता है। हिमालय आक्सीजन का भंडार है इसके बावजूद थी पर्वतीय क्षेत्रों की सुध राजनीतिक व्यवस्था को नहीं। पहाड़ के गांव, तकनीक सुविधाओं के अभाव के कारण शहरों की बराबरी नहीं कर पा रहे है। जल,जंगल,जमीन के बावजूद पर्वतीय क्षेत्रों को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, विकास से वंचित कर पलायन को बढ़ावा देने को विवश गांव समाजिक, आर्थिक राजनीतिक अन्याय को दर्शाता है। सरकार का गांवों के प्रति कोई सरोकार नहीं है। सही नीति नही होने के कारण पहाड़ पर भूमाफियाओं का बोलबाला है। नीतियां शहर आधारित बनती है। कुशल नेतृत्व की जरूरत है जो निवासियों के मानसिक चेतना जाग्रत कर पहाड़ की महत्ता को बता सके।

संदर्भ

1. यूनेस्को की 2015 रिपोर्ट। इंडिया टूडे।
2. Sustainable development in Mountain- Georgi Zhelozov.
3. जलपुरूष मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित राजेन्द्र सिंह का उमर उजाला को साक्षात्कार मई – 2017
4. डा0 समीर तिवारी, गंगोत्री प्रभारी, वाडिया हिमालय भू–विज्ञान संस्थान।
5. जल पुरूष राजेन्द्र सिंह के विचार 'गगास' संर्वद्धन पर। अमर उजाला में।
6. महात्मा गांधी के शब्द – My experience with Truth.
7. सुमित्रा महाजन, 1916 लोकसभा भाषण।
8. डा0 अनिल जोशी, हेस्को के निदेशक का अमर उजाला को साक्षात्कार।
9. मोहन काण्डपाल, सीड संस्था के संस्थापक
10. हेस्को के संस्थापक अनिल जोशी का हिन्दुस्तान टाइम्स को साक्षात्कार।
11. अन्तराष्ट्रीय जल प्रबन्धन रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्रीय संघ 2017
12. डब्लू0एच0ओ0 की रिपोर्ट 2016
13. New aspects of Political Development ल्यू–शियन पाई।
14. मुम्बई मौखिक 2016 (पलायन पर विचार गोष्ठी)
15. अमर उजाला, पद यात्रा गगास नदी पर 22 मई 2017 से
16. प्रो0 लुईस – The Theory of Economic growth.
17. UNO आर्थिक प्रतिवेदन– 2016 Aljazeera
18. Madison, British Economist, Devt. centre Study VI, Millenial Perspective.
19. प्रो0 रोस्टोव & The stages of Economic growth.